SHODH SAGAR®
International Journal for Research Publication and Seminar
ISSN: 2278-6848 | Vol. 15 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

स्वच्छ भारत अभियान की चुनौतियां और संभावनाएं एक अध्ययन

डॉक्टर बबीता* सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग बाबा मस्तनाथ यूनिवर्सिटी अस्थल बोहर ,रोहतक	**आजाद सिंह** राजनीतिक विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल, बोहर रोहतक
Published: 21/06/2024	* Corresponding author

DOI: https://doi.org/10.36676/jrps.v15.i2.21

शोधार्थी

सारांश
प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान को तीन साल पूरे हो गए हैं। स्वच्छता का यह अभियान इन 70 सालों में भारत सरकार का देश में सफाई और उसे खुले में शौच से मुक्त करने का कोई पहला कदम हो ऐसा नहीं है। पूर्ववर्ती सरकारे गांवों में स्वच्छता के लिए कोई न कोई कार्यक्रम चलाती रही है। इस दिशा में ठोस कदम 1999 में सरकार ने उठाया था एवं समग्र स्वच्छता के उद्देश्य से निर्मल भारत अभियान की शुरुआत की गई, जिसका नाम संपूर्ण स्वच्छता अभियान रखा गया था। किन्तु आजादी के इतने वर्षो बाद भी हमारे देश में स्वछता को लेकर लोग जागरूक नहीं है। 2014 में आई सयुंक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में कहा गया, जिसमे विस्तृत रूप से लेख था कि भारत की करीब 60 फीसदी आबादी खुले में शौच करती है और इसी रिपोर्ट के आधार पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की एवं इसे अपनी सरकार की प्राथमिकता माना।
आज हमें सुराज की स्थापना के लिये स्वच्छाग्रही देशवासियों के जनभागीदारी के महत्व को रेखांकित करने की जरुरत है। हाल ही में स्वच्छ भारत अभियान के तीन साल पूरे होने पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि एक हजार गांधीजी आ जाएं, एक लाख मोदी आ जाएं, सभी मुख्यमंत्री और सरकारें लग जाएं लेकिन स्वच्छता का सपना तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक सवा सौ करोड़ देशवासी इसे जनभागीदारी के साथ आगे नहीं बढ़ाएंगे। स्वच्छता अभियान के तीन वर्ष में हम आगे बढ़े हैं क्योंकि जब इस कार्यक्रम को तीन वर्ष पहले शुरू किया गया था, तब मीडिया, राजनीतिक दलों समेत कई वर्गों द्वारा इस अभियान की आलोचना की गयी थी। अधिकतर समाज के हितधारक प्रधानमंत्री जी को उनकी 2 अक्टूबर की छुटटी खराब करने के लिए दोषी मानते थे किन्तु आज वे सब इसे महत्व दे रहे है।
प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान के बारे में बताया गया है और उसकी उपलब्धियां और चुनौतियों के बारे में भी बताया गया है

मुख्य शब्द स्वच्छ भारत अभियान, उपलब्धियां,चुनौतियां।

भूमिका
स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) के क्रियान्वयन का आधा सफर हम तय कर चुके हैं। इसमें काफी गति आयी है और महत्वपूर्ण सफलताएं भी मिली हैं। जब माननीय प्रधानमंत्री ने पहली बार लाल किले की प्राचीर से इस अभियान की शुरुआत की थी, तब से अब तक यह धीरे–धीरे एक जन–आंदोलन का रूप ले चुका है। 2 अक्तूबर, 2014 को इस कार्यक्रम की शुरुआत से अब तक ग्रामीण स्वच्छता भारत में सफाई व्यवस्था 42 प्रतिशत से बढ़कर 63 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। ग्रामीण भारत में खुले में शौच करने वाले लोगों की संख्या 55 करोड़ से घटकर 35 करोड़ तक हो गयी है।
1,90,000 गांव, 130 जिले और तीन राज्य पूरी तरह खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) हो चुके हैं। इस कार्यक्रम का लक्ष्य 2 अक्तूबर, 2019 तक भारत को खुले में शौच मुक्त देश बनाना है।
स्वच्छता को प्राथमिकता देना कई कारणों से महत्वपूर्ण है। स्वच्छता की कमी ही पांच साल से कम उम्र के बच्चों में डायरिया जैसी समस्या का मुख्य कारण है। इसी के कारण कई बच्चों की जान भी चली जाती है, जिनको बचाया जा सकता है। स्वच्छता महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान के लिए भी जरूरी है। भारत जहां आर्थिक शक्ति बनने की तरफ कदम आगे बढ़ा रहा है, वहां खुले में शौच के चलन को खत्म करना बेहद अनिवार्य है।
पहले के समय में चलने वाले स्वच्छता कार्यक्रमों की तरह स्वच्छ भारत अभियान सिर्फ शौचालय निर्माण कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक रूप से जनता में बदलाव लाने वाला आंदोलन है। सड़क, पुल या एयरपोर्ट बनाना फिर भी आसान है, लेकिन

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

इंसान के व्यवहार को बदलना काफी मुश्किल और जटिल मुद्दा है। अगर आप 50 करोड़ से ज्यादा लोगों की खुले में शौच की इस आदत को बदलने की कोशिश कर रहे हैं, जो वर्षों से उनके साथ है, तो यह एक बहुत बड़ा कार्य है।
हालांकि जनसंचार अभियान उपयोगी साबित होते हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर इस व्यावहारिक बदलाव को लाने के लिए प्रशिक्षित लोगों की जरूरत है। ये लोग गांवों में जाकर वहां के लोगों से बातचीत करके साफ–सफाई और शौचलाओं की अहमियत के बारे में बता सकते हैं। देशभर के राज्यों और जिलों में इस तरह के प्रशिक्षित प्रोत्साहनकर्ताओं की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है, लेकिन इसमें और बढ़ोतरी की जरूरत है।
पेय जल एवं स्वच्छता मंत्रालय क्षमता निर्माण, मानव संसाधन, व्यवहार परिवर्तन संचार, ज्ञान साझाकरण, निगरानी और मूल्यांकन जैसे क्रियाकलापों के जरिए राज्यों को स्वच्छ भारत मिशन के क्रियान्वयन में सहयोग करता है।

अध्ययन के उद्देश्य
1. स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानना।
2. स्वच्छ भारत अभियान की चुनौतियां व उपलब्धियां के बारे में जानना।

पेय जलापूर्ति एवं स्वच्छता संबंधी संयुक्त राष्ट्र–विश्व स्वास्थ्य संगठन निगरानी कार्यक्रम (2010) के अनुसार स्थायी परिष्कृत स्वच्छता प्रणाली एक ऐसी श्उन्नतश स्वच्छता व्यवस्था है, जो मानव मल–मूत्र को स्वास्थ्यकर ढंग से मानव संपर्क से पृथक करती है। इसमें मल–मूत्र सीवर प्रणाली या विभिन्न प्रकार के शौचालयों में प्रक्षालित यानी फ्लश कर दिया जाता है या बहाया जाता है। ऐसे शौचालयों में सैप्टिक टैंक वाले शौचालय, पिट यानी गड्ढे वाले शौचालय, उन्नत पिट शौचालय, स्लैब पिट शौचालय या कंपोस्टिंग शौचायलय शामिल हैं।
स्वच्छता सुविधाओं के अभाव का दुष्प्रभाव मानव स्वास्थ्य और गरिमा पर पड़ता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, भारत स्वच्छता सुविधाओं पर सकल घरेलू उत्पाद का 0.2 प्रतिशत खर्च करता है जबकि पाकिस्तान और नेपाल इन सुविधाओं पर सकल घरेलू उत्पाद का क्रमशः 0.4 प्रतिशत और 0.8 प्रतिशत खर्च करते हैं। ग्रामीण भारत के लिए, स्वच्छता सुविधाओं में मानव मल–मूत्र के सुरक्षित प्रबंधन और सम्बद्ध स्वच्छ व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ग्रामीण भारत को अपरिष्कृत स्वच्छता सुविधाओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें विशेष रूप से खुले में शौच जाना शामिल है। खुले में शौच जाने की प्रवृत्ति मानव सुरक्षा और गरिमा में कमी लाती है। ग्रामीण भारत को स्वच्छ शौचालयों की कमी और मानव मल–मूत्र के असुरक्षित निपटान की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मानव मल–मूत्र 50 से अधिक प्रकार के संक्रमणों का प्रमुख स्रोत है और इससे लगभग 80 प्रतिशत बीमारियां पैदा होती हैं।
यूनिसेफ की एक ताजा रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत में करीब 54 प्रतिशत लोग खुले में मल त्याग करते हैं, जबकि ब्राजील और बांग्लादेश में ऐसा करने वाले लोग मात्र 7 प्रतिशत हैं। भारत में 5 वर्ष से कम आयु के मात्र 6 प्रतिशत ग्रामीण बच्चे शौचालयों का इस्तेमाल करते हैं और सभी भारतीयों में करीब 50 प्रतिशत ऐसे हैं, जो मल से संपर्क होने पर अपने हाथ साबुन से धोते हैं। केंद्र सरकार की सामाजिक–आर्थिक गणना (2011) से पता चला है कि ग्रामीण परिवारों में मात्र 30.7 प्रतिशत और शहरी परिवारों में 81.4 प्रतिशत शौचालय सुविधाएं थीं। इनमें से ग्रामीण परिवारों में 63.2 प्रतिशत शौचालय निकासी रहित थे, जबकि शहरी क्षेत्रों के परिवारों में ऐसे शौचालय मात्र 18.2 प्रतिशत थे। ग्रामीण क्षेत्रों में पाइप के जरिए सीवर प्रणाली सुविधा मात्र 2.2 प्रतिशत परिवारों के पास थी। भारत सरकार द्वारा 2 अक्तूबर, 2014 से शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान के संदर्भ में इस आलेख में सरकारी कार्यक्रमों की संक्षिप्त समीक्षा की गई है और लक्षित अभियान को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण कार्ययोजना का सुझाव दिया गया है।
स्वच्छ भारत मिशनः उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ
स्वच्छता एक स्वस्थ और प्रगतिशील राष्ट्र की कुंजी है, और इस प्रकार भारत सरकार द्वारा इसे प्राप्त करने के लिए स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया था। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 02 अक्टूबर 2014 को नई दिल्ली के राजपथ पर स्वच्छ भारत मिशन या अभियान की शुरुआत की। इस मिशन का लक्ष्य सार्वभौमिक स्वच्छता कवरेज हासिल करना और पूरे देश में स्वच्छ स्वच्छता प्रथाओं को प्रोत्साहित करना है। इसे स्वच्छ भारत मिशन के नाम से भी जाना जाता हैय इसे महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि के रूप में लॉन्च किया गया था।

मिशन की चुनौतियाँ
इस मिशन का प्राथमिक उद्देश्य 2 अक्टूबर 2019 तक भारत को ष्खुले में शौच मुक्तष् (ओडीएफ) प्राप्त करना था। स्वच्छ भारत अभियान के दो उप–मिशन हैं एक शहरी क्षेत्रों के लिए और दूसरा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए, जिसे आमतौर पर स्वच्छ भारत शहरी कहा जाता है। आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा शासित है, और स्वच्छ भारत ग्रामीण पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत संचालित होता है।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

इस स्वच्छ भारत मिशन से उम्मीदों का स्तर ऊंचा था, क्योंकि हमारे देश को महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती तक एक स्वच्छ देश बनना था। भारत सरकार ने खुले में शौच को खत्म करने और हमारे ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार के लिए 2014 में स्वच्छ भारत मिशन शुरू किया।

कार्यक्रम की उपलब्धिः

सरकार का दावा है कि उन्होंने स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत 2014 और 2019 के मध्य के बीच ग्रामीण भारत में शौचालयों के कवरेज को 39ः से बढ़ाकर 95ः से अधिक कर दिया है। अभियान की शुरुआत के बाद से उन्होंने ग्रामीण और शहरी भारत में 100 मिलियन से अधिक शौचालयों का निर्माण किया है। इस स्वच्छ बारात मिशन की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक पारंपरिक मीडिया और सोशल मीडिया में कई राष्ट्रव्यापी अभियानों के साथ समाज में सामाजिक और व्यवहारिक परिवर्तन करना था।

अब लोग खुले में शौच के फायदे और नुकसान के बारे में काफी जागरूक हैं। खुले में शौच को अब एक विकल्प नहीं बल्कि एक अस्वास्थ्यकर प्रथा माना जाता है, और हर कोई खुले में शौच मुक्त देश का खिताब हासिल करने में सरकार की मदद करना चाहता है।

अब लोग खुले में शौच के फायदे और नुकसान के बारे में काफी जागरूक हैं। खुले में शौच को अब एक विकल्प नहीं बल्कि एक अस्वास्थ्यकर प्रथा माना जाता है, और हर कोई खुले में शौच मुक्त देश का खिताब हासिल करने में सरकार की मदद करना चाहता है।

सरकार के प्रयास

2 अक्टूबर 2014 को जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यह अभियान शुरू किया तब उनके साथ कई राजनेता, उद्योगपति, बॉलीवुड कलाकार सहित पूरे देश में विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के शिक्षक, छात्र और सरकारी कर्मचारी स्वेच्छा से इस स्वच्छ भारत अभियान में शामिल हुए। इसे जनआंदोलन बनाने के लिए, स्वच्छ भारत अभियान में योगदान देने और सोशल मीडिया पर इसे साझा करने के लिए उन्होंने नौ हस्तियों को आमंत्रित किया है, जिनमें मृदुला सिन्हा, सचिन तेंदुलकर, बाबा रामेदव, शशि थरूर, अनिल अंबानी, कमल हसन, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा और टेलिविजन कार्यक्रम तारक मेहता का उल्टा चश्मा की टीम शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इन कार्यों को अंजाम देने के लिए नौ अन्य लोगों को आमंत्रित किया गया है और इस तरह एक श्रृंखला–सी बना दी गई है। इस प्रकार इससे लोग जुड़ते जाएंगे। प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों को स्वच्छता से स्वास्थ्य की अहमियत को समझाते हुए हर देशवासी से इसे अपनाने की अपील की थी। उनके इस कदम से स्वच्छता जैसा उपेक्षित विषय अचानक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में आ गया।

इस मुहिम में राज्यों ने भी भाग लिया है और कई अन्य कार्यक्रम और योजनाएं इस अभियान को सफल बनाने के लिए तैयार की जा रही हैं। हर साल सरकार देश भर से साफ शहरों की सूची जारी की जा रही है ताकि सभी शहरों में खुद को अधिक से अधिक स्वच्छ एवं बेहतर बनाने हेतु स्वस्थ प्रतिस्पर्धा हो सके। अधिकांश राज्यों ने राज्य या सरकारी कार्यालयों में तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। बहुत से स्कूलों और कॉलेजों ने इस अभियान में दिलचस्पी दिखाई है और वे इसे प्रभावी रूप से लागू कर रहे हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए इस अभियान के तहत् स्वच्छ पखवाड़ा मनाने के साथ, प्रत्येक केन्द्रीय मंत्रालय ने एक स्वच्छता एक्शन प्लान बनाया है।

सरकार घरों में शौचालय बनाने के लिए लोगों को सब्सिडी दे रही है। व्यवहार में बदलाव और उपयुक्त तकनीकों के इस्तेमाल से आगे जरूरी है कि स्वच्छता सबका दायित्व बने। इसके लिए निजी क्षेत्र भी स्वच्छता अभियान में तेजी से शामिल हो रहे हैं। इसका एक उदाहरण टाटा समूह के प्रयास हैं। इसने भारत के प्रत्येक जिले में नियुक्त 600 युवाओं को प्रशिक्षण और आर्थिक मदद दी है, जिससे कि स्वच्छ भारत मिशन को लागू करने वाले कलेक्टरों को सहयोग किया जा सके।

स्वच्छ भारत मिशन के क्रियान्वयन में काफी गति आयी है और महत्त्वपूर्ण सफलताएं भी मिली हैं। 2 अक्टूबर, 2014 को इस कार्यक्रम की शुरूआत से अब तक ग्रामीण स्वच्छता भारत में सफाई व्यवस्था 42 प्रतिशत से बढ़कर 63 प्रतिशत तक पहुंच चुकी हैं। ग्रामीण भारत में खुले में शौच करने वाले लोगों की संख्या 55 करोड़ से घटकर 35 करोड़ तक हो गयी है। भारत में अक्टूबर 2014 एवं नवम्बर 2017 के बीच घरों में 52 मिलियन शौचालय बनवाए गए है। पिछले 4 वर्षों में देश के पिछड़े इलाकों के कई गांव खुले में होने वाले शौच से बिल्कुल ही मुक्त हो गए हैं। जब माननीय प्रधानमंत्री ने पहली बार लाल किले की प्राचीर में इस अभियान की शुरूआत की थी, तब से अब तक यह धीरे–धीरे एक जन–आंदोलन का रूप ले चुका है।

स्वच्छता के मामले में आज गांव, नगर, शहर और कस्बे सभी स्थान पर स्वच्छ भारत मिशनश का अभियान पहुंच रहा है। इससे आम और खास दोनों तरह के लोगों में श्स्वच्छता का विचार पनप रहा है और इस अभियान के कारण देशभर के बहुत सारे क्षेत्रों में साफ–सफाई के प्रति जागरूकता फैली है। लेकिन इस अभियान की पूर्ण सफलता हेतु हमें इस पर चिंतन करने करने की जरूरत है।

निष्कर्ष

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

स्वच्छता किसी और पर थोपा जाने वाला कार्य नहीं है जो किसी पर दबाव डालकर कराया जाए। अच्छी सेहत के लिए हर प्रकार की स्वच्छता जरूरी है। इसीलिए स्वच्छता के पूर्व हर एक को इसके महत्व के बारे में पता होना चाहिए। भारत के क्रमिक विकास के लिए स्वच्छ भारत मिशन बहुत ही जरूरी है जब तक कि लक्ष्य न पूर्ण न हो जाए। भारत में लोगों के लिए वास्तव में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक कल्याण की भावना को प्राप्त करना बहुत जरूरी है। यह वास्तविक मायने में भारत की स्थिति की अग्रिम बनाने के लिए है।

स्वच्छ भारत मिशन का एक अहम तत्व नतीजों का प्रमाणीकरण भी है। यह इस कार्यक्रम की विश्वसनीयता के लिए बहुत जरूरी है। वर्तमान में जिला–स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर की तृतीय पक्ष सत्यापन के साथ एक बहुस्तरीय प्रक्रिया चल रही है। इस प्रयासों को और मजबूत बनाए जाने की जरूरत है और आने वाले दिनों में मुख्यधारा में शामिल करने की जरूरत है। स्वच्छता अभियान मिशन को सहभागिता के द्वारा आगे बढ़ाना आज भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि स्वच्छता देश के प्रत्येक व्यक्ति की आदत बन जाए तो देश की कायापलट ही हो जाएगी क्योंकि अस्वच्छता के कारण आज देश भ्रष्टाचार, अनाचार, स्वार्थ, हिंसा, अधर्म और पापाचार की ओर बढ़ता जा रहा है। ऐसे में देश के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी स्वच्छ रहने और दूसरों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करना देशभक्ति का ही कार्य है।

जैसा कि हम सभी ने सबसे प्रसिद्ध कहावत के बारे में सुना है कि ष्स्वच्छता के आगे बुलंदी है। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि एक स्वस्थ देश और स्वस्थ समाज को अपने नागरिकों को जीवन के हर कदम में स्वच्छ और स्वस्थ होने की आवश्यकता है। जब देश की आम जनता भी इस अभियान में सहयोग देने लगेगी तो इस अभियान को सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। स्वच्छ भारत अभियान एक बड़ी ही कारगर योजना साबित होगी जिसके जरिये लोग स्वच्छता के महत्व को अच्छी तरह से समझ पाएंगे जिसके साथ ही भारत एक सुन्दर और स्वच्छ देश बन जाएगा। यदि देश के नागरिक इस अभियान को एक जिम्मेदारी के रूप में लेते हैं तो इस अभियान को पूरा होने में कोई रोक नहीं सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बदरा, एस शर्मा मैनेजमेंट (2015) लेसन्स फ्रॉम स्वच्छ भारत मिशन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च इन साइंस एंड इंजीनियरिंग वॉल्यूम। नंबर 4(1),
2. राजगिरे, ए.वी. (2013) खुले में शौचरू गांवों में पीने के पानी में प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत। जीवन विज्ञान जैव प्रौद्योगिकी और फार्मा अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय यात्रा, खंड 2(1), पीपी 238–246
3. देवी बी प्रसाद सामग्री विश्लेषण–एसएसआरबेरेलसन, बी और साल्टर पीजे (1946) में एक विधि।
4. मेजॉरिटी एंड माइनॉरिटी अमेरिकनरू एन एनालिसिस ऑफ मैगजीन फिक्शन, द पब्लिक ओपिनियन क्वार्टरली, वॉल्यूम। 10, पीपी.168–190
5 .राइस, आर. ई और एटकिन्स, सी.के. (2013) सार्वजनिक संचार अभियान चौथा संस्करण हजार ओक्स, कैलिफोर्नियारू सेज।
6. रशीद के. जेजेटीयू के विद्वान, चुडेला 211214011, हरे और स्वच्छ भारत का सपना। रेक्सजर्नल आईएसएसएन 2321–1067 नवीकरणीय शोध जर्नल
7. क्लॉत्जर, सी. (2007)। क्या मीडिया सुधार के लिए बहुत देर हो चुकी है? सेंट लुइस पत्रकारिता समीक्षा, 38(294), पीपी। 28–29
8. अगवान, अतुल (2014) कॉर्पोरेट सीरियल रिस्पॉन्सिबिलिटीरू ए गेटवे टू स्वच्छ भारत अभियान इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमर्स एंड लॉ (आईआरजेसीएल) खंडरू1(5)।
9. डैश, दीपक, (2016, 28 मई), 3 लाख गाँव खुले में शौच से मुक्त घोषित, टाइम्स ऑफ इंडिया, पृ.8
10. स्वच्छ भारत अभियान, एम. के. सिंह सोलर बुक्स 1 जनवरी 2017 पृ. सं. 78.
11. सिंह पंकज के., स्वच्छ भारत समृद्ध भारत डायमंड बुक्स 1 अक्टूबर 2015
12. भारत में स्वच्छ अभियान कार्य नीति और – क्रियान्वयन नेशनल बुक ट्रस्ट 1 जनवरी 2016
13. शर्मा, विरेन्द्र प्रकाश श्भारत में समाज, रिपोर्ट ऑफ बर्ल्ड हेल्फ ऑर्गनाइजेशन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2015, पृ. 330
14. बेन्नी जॉर्ज, निर्मल ग्राम पुरस्कार ग्रामीण भारत में प्रोत्साहन योजना में एक अनूठी प्रयोग ग्रामीण अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका (आईजेआरएस) वॉल्यूम 16 नंबर, पृ.सं. 36 1 अप्रैल 2009
15. मृदुला सिन्हा एवं सिन्हा, आर.के. के., स्वच्छ भारत एक स्वच्छ भारत प्रभात प्रकाशन, पृ. 24, 6 मई 2016।
16. स्वच्छ भारत चेक लिस्ट किरण बेदी व पवन चौधरी विस्डम विलेज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, पृ.सं. 18, 1 जनवरी 2015
17.जोशीएस. सी., स्वच्छ भारत मिशन एन एसएसमेंट 1 जनवरी 2017 पृ.सं. 102

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com